Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

भारतीय ज्ञान परम्परा और शिक्षा

डॉ. अनिता धाकड़ *

असिस्टेंट प्रोफेसर, ज्योति महिला विद्यापीठ महला, जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: *डॉ. अनिता धाकड़

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18247617

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा, जिसे भारतीय ज्ञान प्रणाली भी कहा जाता है, भारत की प्राचीन ज्ञान और शिक्षा की एक समृद्ध एवं विविध प्रणाली है। इसमें वेदों, उपनिषदों, पुराणों, शास्त्रों तथा लोक-साहित्य में निहित ज्ञान सम्मिलित है। यह ज्ञान केवल दार्शनिक और आध्यात्मिक ही नहीं, बल्कि खगोल, चिकित्सा, विज्ञान, गणित आदि विषयों पर भी आधारित है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का आरंभ भारतीय भू-भाग में हुआ है, इसलिए इसे भारतीय परंपरा कहा गया है। जिस विषय या परंपरा का प्रारंभ जहाँ से होता है, वही उसकी पहचान होती है। यह परंपरा सभी को एकता के सूत्र में बाँधने वाली है।

प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणालियों में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। महिलाओं ने दर्शन, विज्ञान, चिकित्सा, साहित्य और कला जैसे विषयों में योगदान दिया, उनका अभ्यास किया तथा ज्ञान की संरक्षक के रूप में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। कई विदुषी महिलाओं ने विद्वान, संत और कलाकार के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की है। भाषा के क्षेत्र में भी अनेक विदुषी महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

महर्षि पाणिनि के अनुसार वेदों को समझने के लिए शब्दों के अर्थ का ज्ञान आवश्यक है, और यह ज्ञान व्याकरण के माध्यम से ही संभव है। व्याकरण वेदों का एक प्रमुख अंग है, जिसमें भी महिलाओं की भूमिका उल्लेखनीय रही है।

महिलाएँ केवल ज्ञान की संरक्षिका और प्रसारक ही नहीं रहीं, बल्कि उन्होंने विभिन्न बौद्धिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। प्राचीन काल से ही महिलाओं को शिक्षा, कला, साहित्य और विज्ञान जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 25-11-2025
- **Accepted:** 29-12-2025
- **Published:** 14-01-2026
- **IJCRM:**4(1); 2026: 66-68
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

डॉ. अनिता धाकड़. भारतीय ज्ञान परम्परा और शिक्षा. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(1):66-68.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

कुंजी शब्द: ज्ञान परम्परा, सिक्ततकरण, संरक्षक्षका, वैददक काल.

© 2026 डॉ. अनिता धाकड़. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

परिचय

भारतीय ज्ञान परम्परा जिसे भारतीय ज्ञान प्रणाली भी कहा जाता है, भारत वर्ष में शिक्षा का उद्देश्य प्राचीन काल से ही रोजगार या कौशल प्राप्त करना ना होकर अपितु व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना रहा है। भारतीय ज्ञान की विविध शाखाओं के अंतर्गत वेद, उपनिषद्, आयुर्वेद, दर्शन, न्यायशास्त्र सम्मिलित है। भारतीय ज्ञान परम्परा का आरम्भ भारत की भूमि में होने के कारण इसे भारतीय ज्ञान परम्परा कहा गया है यह परम्परा सभी को एकता के सूत्र में बांधे हुए है। पश्चिमी शिक्षा पद्धति जहां एक ओर भौतिक प्रगति पर केन्द्रित थी तो वहीं दूसरी ओर भारतीय ज्ञान परम्परा ने 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' के सिद्धांत पर जीवन का मार्ग दिखाया। इसी सिद्धांत के कारण आज पूरा विश्व मूल्य आधारित शिक्षा और समग्र शिक्षा अर्थात् सर्वांगीण की विकास की बात कर रहा है।

उद्देश्यः-

1. भारतीय ज्ञान प्रणाली की मूल अवधारणा और स्वरूप को समझना।
2. भारतीय ज्ञान परम्परा की मुख्य शाखाओं वेद, उपनिषद् आयुर्वेद आदि का परिचय कराना।
3. भारतीय ज्ञान परम्परा के सामाजिक, वैज्ञानिक और वैश्विक योगदान को समझना।
4. शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय ज्ञान परम्परा प्रणाली को लागू करने की चुनौतियों और संसाधनों पर विचार करना।

कार्य पद्धतिः-

यह शोध द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। इसमें प्राचीन ग्रंथों, सरकारी दस्तावेज़ों, विभिन्न शोध पत्रों तथा शिक्षा मंत्रालय (भारत सरकार) द्वारा जारी शिक्षा सर्वेक्षण रिपोर्टों का अध्ययन किया गया है। इस शोध में वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।....2

2- भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रकृति या स्वरूपः-

भारतीय ज्ञान परम्परा मूल रूप से ''सर्वे भवन्तु सुखिनः सन्तु'' पर आधारित है।

इसमें चार मुख्य आयाम हैः-

1. आध्यात्मिक ज्ञान - भारतीय ज्ञान परम्परा के वेद, उपनिषद, दर्शन, मानव जीवन के उद्देश्य का बोध कराते है।
2. वैज्ञानिक ज्ञान - गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा के क्षेत्र में भारत का योगदान अग्रणी रहा है।
3. कलात्मक ज्ञान- चित्रकला, संगीत, वास्तुकला ये सभी भारतीय जीवन को सौन्दर्यात्मक दृष्टिकोण प्रदान करते है।

सामाजिक एवं नीतिशास्त्रः-

मनुस्मृति, चाणक्य का अर्थशास्त्र जैसे ग्रन्थ समाज को नैतिक शिक्षा एवं आधार प्रदान करती है।

भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक शिक्षाः-

आधुनिक शिक्षा लक्ष्य नौकरी प्राप्त करना था, तकनीकी दक्षता प्राप्त करना है जबकि भारतीय शिक्षा, नई शिक्षा नीति (छम्च् 2020) ने इसे संतुष्टि करते हुए (प्ज्ञै) को शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल करने की पहले की है।

मुख्य बातेंः-

1. विद्यालयों में योग, ध्यान और संस्कृत का समावेश।
2. विश्वविद्यालयों में प्ज्ञै केन्द्र और शोध को स्थान।
3. स्थानीय भाषाओं में शिक्षा को बढ़ावा देना।
4. पाठ्यक्रम में आयुर्वेद, पर्यावरण, दर्शन और नीतिशास्त्र को स्थान।

....3

भारतीय ज्ञान परम्परा की वैश्विक प्रासंगिकताः-

1. योग और ध्यान - संपूर्ण विश्व द्वारा अच्छे मानसिक स्वास्थ्य हेतु एवं तनाव रोकने हेतु योग व ध्यान को अपनाया जा रहा है।
2. आयुर्वेद - प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्र वैश्विक स्तर मान्यता प्राप्त।
3. वसुधैव कुटुम्बकम् - भारतीय, ज्ञान, परम्परा, का यह सिद्धांत विश्वशांति एवं सहयोग का प्रतीक है।
4. संरक्षण एवं पुर्नजीवन- छम्च् 2020 प्राचीन सांस्कृतिक धरोहरों को संरक्षित करने और उन्हें पुनजीर्वित करने का अवसर प्रदान करती है।

चुनौतियाँः-

1. परम्परागत ग्रन्थों का वैज्ञानिक सत्यापन और अनुवाद।
2. भारतीय ज्ञान प्रणाली को आधुनिक शिक्षा में लागू करने हेतु प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी।
3. शिक्षा संस्थानों में संसाधनों की असमानता।
4. युवाओं में भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रति उदासनीता है।

समाधानः-

1. प्ज्ञै आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों के लिए अनिवार्य किये जाएं।
2. विद्यालयी पाठ्यक्रमों में स्थानीय ज्ञान (लोक परम्परा, कृषि ज्ञान) को शिक्षा से जोड़ा जाएं।
3. शोध, संस्थानों को प्रोत्साहन दिया जाए ताकि प्राचीन ग्रन्थों का आधुनिक संदर्भ में अध्ययन हो सके।

निष्कर्षः-

भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल अतीत की धरोहर नहीं अपितु आधुनिक समय की आवश्यकता है इसमें निहित मूल्य विज्ञान और आध्यात्मिक दृष्टि आधुनिक शिक्षा को अधिक मानवीय बना सकता है। यदि शिक्षा नीति और अनुसंधान में प्ज्ञै को केन्द्र माना जाएं तो भारत एक बार फिर विश्व गुरू बन सकता है।

....4

भारतीय ज्ञान परम्परा द्वारा हम छात्रों में अच्छे चरित्र का निर्माण कर सकते है, चारित्रिक विकास के साथ-साथ नैतिक आध्यात्मिक मूल्यों का विकास संरचनात्मक मूल्य का विास कौशल विकास, व्यक्तित्व निर्माण का उल्लेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में किया गया है।
भारतीय ज्ञान परम्परा हमें कार्य करना सिखाती है जो कि स्वार्थ मुक्त हो। भागवत् गीता में भी बताया गया है कि हमारे कर्म में ही ज्ञान दिया है कर्म ही सर्वोपरि है।

© 2026 डॉ. अनिता धाकड़. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

संदर्भः-

1. ओषधि निर्माण एवं औषध परीक्षण पद्धति (ओषध निर्माण एवं भेषज प्रक्रिया)। वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन; वर्ष अज्ञात।
2. चरक संहिता; सुश्रुत संहिता। वाराणसी: चौखम्बा ओरिएण्टालिया; वर्ष अज्ञात।
3. कौटिल्य. अर्थशास्त्र। वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन; वर्ष अज्ञात।
4. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. Indian Knowledge System Division (AICTE). नई दिल्ली: अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद; 2022।
5. Government of India. National Education Policy (NEP) 2020. New Delhi: Ministry of Education; 2020.
6. आर्यभट्ट. आर्यभटीयम्। नई दिल्ली: भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी; वर्ष अज्ञात।
7. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC). भारतीय ज्ञान प्रणाली: एक समग्र दृष्टिकोण। नई दिल्ली: UGC; 2023।

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–NonCommercial–NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the corresponding author

डॉ. अनिता धाकड़ ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान) में शोध निर्देशक के पद पर कार्यरत हैं। उन्हें उच्च शिक्षा, शोध मार्गदर्शन और अकादमिक विकास के क्षेत्र में व्यापक अनुभव प्राप्त है। वे शोधार्थियों को गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान हेतु प्रेरित करने में सक्रिय भूमिका निभाती हैं।

© 2026 डॉ. अनिता धाकड़. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/